२१ - तारों के आगे से आते संदेश

1

परमेश्वर अपने भविष्यवक्ताओं के द्वारा अब भी कहता है।

2

दुनिया के विभिन्न भागों में वैज्ञानिक रेडियो दूरबीनों का प्रयोग कर रहे हैं जो कि बाहरी अंतरिक्ष से ध्वनि सुनने के लिए है।

3

वे यह आशा करते हैं कि हो सकता है कि किसी दिन, वे किसी दूसरी दुनिया पर रहने वाले बुद्धिमान प्राणी का संदेश सुनेंगे।

4

यहाँ एक गवाही है कि अभी हजारों वर्षों के लिए पृथ्वी को एक संदेश प्रकाशित हुआ है - परन्तु इसे कुछ लोग ही सुन रहे हैं। यह संदेश इस ग्रह के सृष्टिकर्त्ता से आया है प्रेम का संदेश परमेश्वर से आया है जो कि अपने उपद्रवी बच्चों को फिर से जीतने का प्रयत्न कर रहा है।

5

यह पृथक्करण परमेश्वर और मनुष्य जाति के बीच स्थायी नहीं था। पृथ्वी पर आरंभ की गई प्रत्येक वस्तु सुन्दर थी। एक पूर्ण दुनिया के लिए दो सिद्ध लोग परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

6

(दृश्य)

और उनके बगीचे रूपी घर में परमेश्वर आता था और उनके साथ चलता था तथा आमने सामने बातें करता था। अभी उनकी कल्पना कीजिए संध्या के समय में उनके साथ पैदल घूमता था।

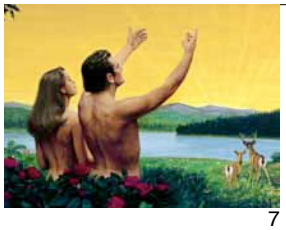
7

यही वह तरीका है जिसकी परमेश्वर ने योजना बनाई थी धार्मिकता की एक सुन्दर सहभागिता। उनको पृथक रखने के लिए कुछ भी नहीं था। उनका एक साथ मिलकर रहना अवश्य ही आनन्द देने वाला हुआ होगा।

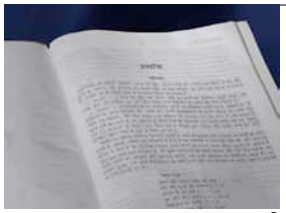
8

परन्तु अत्यन्त दु:ख के साथ कहना पड़ रहा है कि यह प्रेम और एक साथ की सहभागिता बाइबिल में केवल दो अध्याय में ही रही।

9

उत्पत्ति का तीसरा अध्याय एक दु:खदायी कहानी कहता है। आदम और हव्वा ने पाप किया।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

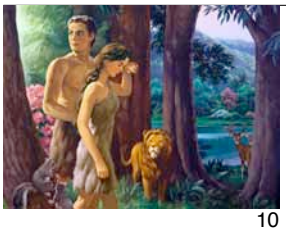
10

उन्होंने परमेश्वर के पवित्र प्रेम के नियम के विरुद्ध विद्रोह किया या उल्लंघन किया। पाप पृथक करता है पाप का परमेश्वर से कोई मेल नहीं है। आदम और हव्वा परमेश्वर के साथ अब प्रत्यक्ष रूप से बातचीत और सहभागिता न रख सके।

11

उन्होंने सर्प लूसीफर की बातें सुनी और परमेश्वर के बदले उसकी आज्ञा मानी और यह पाप है।

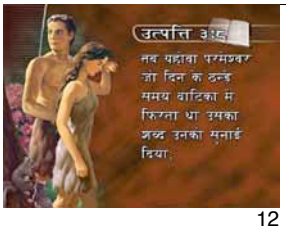

12

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : ८)
बाइबिल कहती है, "तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठन्ड़े समय वाटिका में फिरता था उसका शब्द उनको सुनाई दिया।

13

तब आदम और उसकी पत्नी यहोवा से छिप गए

14

वाटिका के वृक्षों के बीच।"
उत्पत्ति ३ : ८
आदम और हव्वा छिपे थे! वे परमेश्वर का सामना नहीं करना चाहते थे वे केवल छिपना चाहते थे। यह सब पाप करता है।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

15

यह परमेश्वर और मनुष्य के बीच और मनुष्य और दूसरों के बीच प्रेम के संबंध को पृथक और टुकड़े - टुकड़े कर देता है या नष्ट कर देता है।

16

(मूलपाठ : यशायाह ५९ : २)

यशायाह भविष्यवक्ता ने लिखा: "परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है;

17

और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुँह तुम से छिपा है ------"

यशायाह ५९ : २

हाँ, पाप हमें परमेश्वर से पृथक करता है, परन्तु इसने हमें उसके प्रेम से पृथक नहीं किया। परमेश्वर ने पापी मनुष्य के साथ संबंध बनाए रखने का एक रास्ता ढूढ़ा। प्रेम हमेशा संबंध बनाए रखने का एक रास्ता ढूंढ लेता है!

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

18

उसने पृथ्वी पर अपने बच्चों के साथ बातचीत करने का दूसरा रास्ता स्थापित किया -मार्गदर्शन का और निर्देश देने का और अपनी योजना का। उसने स्त्री और पुरूष को चुना अपने प्रेम को बताने और मनुष्य की भलाई की योजना को कहने के लिए जिन पर विश्वास कर सकता था।

19

उनके बीच में से उसने मूसा मिरियाम, शमूएल, हुल्दा, डबोरा, यशायाह, यिर्मयाह और इससे भी अधिक लोगों को चुना।

20

भविष्यवक्तां और भविष्यवक्तिन परमेश्वर की ओर से बोलने वाले लोग थे!

21

यह परमेश्वर के कहने का तरीका था, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, मुझे तुम्हारी चिन्ता है और तुम्हारी सहायता करने के लिए मेरे पास एक योजना है।"

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

22

बाइबिल में यहोवा और बहुत से लोगों के बीच वार्तालापों का उल्लेख है, परन्तु ये वार्तालाप और सहभागिता वैसी नहीं थी जैसा कि अदन की वाटिका में आदम, हव्वा, और परमेश्वर के बीच बाइबिल में परमेश्वर और बहुत से लोगों के बीच वार्तालापों का उल्लेख है, परन्तु ये वार्तालाप और सहभागिता वैसी नहीं थी जैसा कि अदन की वाटिका में आदम, हव्वा, और परमेश्वर के बीच थी।

23

कभी परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा, कभी स्वर्गदूतों के द्वारा, और कभी चुने गए संदेशवाहकों के द्वारा अपना संदेश देता था। अब तक की जानकारी के अनुसार मानव इतिहास के प्रथम २५०० वर्षों में परमेश्वर से आने वाला कोई लिखित प्रकाशितवाक्य नहीं था। जिन्होंने परमेश्वर से सीखा था उन्होंने दूसरों को बताया। परन्तु परमेश्वर ने अपने लोगों को अपना संदेश देने के लिये जिस तरीके का सर्वाधिक प्रयोग किया वह

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

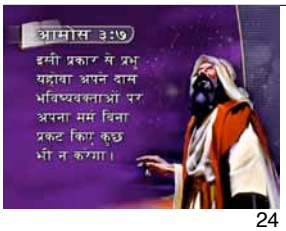

24

(मूलपाठ : आमोस ३ : ७)

वह था भविष्यवक्ता और भविष्यवक्तिन द्वारा संदेश। ये पुरुष और स्त्रियां जो पवित्र आत्मा के वश में हो कर परमेश्वर के लिए बोलते थे। इसमें अधिक आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि बाइबिल स्पष्ट कहती है, "इसी प्रकार से प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यवक्ताओं पर अपना मर्म बिना प्रकट किए कुछ भी न करेगा।"

आमोस ३:७

25

आइए ध्यान दें कि ये भविष्यवक्ता किस प्रकार संदेश प्राप्त करते थे:

26

(मूलपाठः २ पतरस १:२१)

"क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी पुराने समय में की इच्छा से कभी नहीं हुई :

27

पर भक्तजन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।"

२ पतरस १:२१

यहाँ तक कि नूह के दिन के महान जलप्रलय से पहले भी परमेश्वर के पास भविष्यवक्ता थे।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

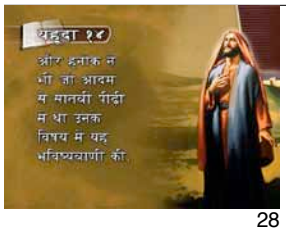

28 (मूलपाठः यहूदा १४)

"और हनोक ने भी जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था उनके विषय में यह भविष्यवाणी की,

29 "देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आया।"

यहूदा १४

हनोक पहला व्यक्ति था जिसकी चर्चा बाइबिल में है जिसके पास भविष्यवाणी का दान था। परन्तु और भी दूसरे हैं!

30 (मूलपाठः प्रेरितों के काम ३:२१)

बाइबिल कहती है, "परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं के मुख से की है, जो जगत की उत्पत्ति से होते आए हैं।"

प्रेरितों के काम ३:२१

दूसरे भविष्यवक्ता नूह ने संसार के जलप्रलय से नाश होने की १२० वर्ष पूर्व इसकी भविष्यवाणी कर दी थी।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

31

जलप्रलय के बाद, हम बहुत से भविष्यवक्ता और भविष्यवक्तिन जैसे मिरियम, डबोरा, यिर्मयाह, यशायाह, यहेजकेल और दूसरे भविष्यवक्ताओं के विषय में जानते हैं। वे धार्मिकता के शिक्षक थे और नैतिकता तथा आत्मिकता के मार्गदर्शक जो परमेश्वर के लिए बोलते थे।

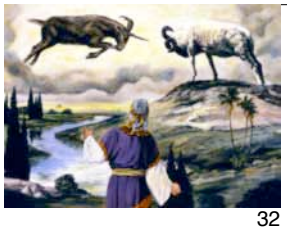

32

कभी कभी परमेश्वर दर्शन के द्वारा भविष्यवक्ताओं और भविष्यवक्तिनों पर अपनी इच्छा प्रकट करता था, कभी स्वप्न और कभी वचन के द्वारा।
परन्तु हमेशा पवित्र आत्मा के द्वारा।

33

(मूलपाठः गिनती १२:६)
यहोवा ने कहाः "...यदि तुम में कोई नबी हो, तो उस पर मै यहोवा दर्शन के द्वारा अपने आप को प्रकट करूंगा;

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

34

मैं स्वप्न में उस से बात करूँगा।"

गिनती १२:६

कभी-कभी परमेश्वर के संदेशवाहकों को परमेश्वर के लिए बोलने का निर्देश दिया जाता था, कभी -कभी वे लिखते थे या उससे प्राप्त संदेश का लेखा-जोखा रखते थे। वास्तव में, बाईबिल भविष्यवक्ताओं के सेवा कार्य की उपज है। प्रत्येक लेखक परमेश्वर की योजना का एक भाग था।

35

सभी ने "पवित्र आत्मा द्वारा उभारे जाने से" उसके लिए बोला या लिखा। उनके द्वारा परमेश्वर ने पृथ्वी पर रहने वाले अपने बच्चों को प्रेमपत्र भेजा।

36

यह उसके कहने का तरीका है,

"मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, और मैं तुम्हारे साथ सम्पर्क बनाए रखना चाहता हूँ।"

और विशेष रूप से वह बताना चाहता है कि उस दिन की उसे प्रतीक्षा है जब हम और वह आमने-सामने उसके साथ सहभागिता करेंगे!

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

37

नए नियम के सभी लेखक -- मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना, पौलुस याकूब पतरस और यहूदा -- उस योजना के भाग थे। सबके पास भविष्यवाणी का वरदान था। दूसरे और भी थे जो परमेश्वर की बातें कर रहे थे जैसे शमौन, अगैबस, बरनाबास, और हन्ना,

38

(मूलपाठः प्रेरितों के काम २१:९)
और फिलिप की चार पुत्रियाँ थीं "जो भविष्यवाणी करती थीं।"
ये सभी अंग थे जिनका परमेश्वर ने अपनी इच्छा को प्रकट करने तथा प्रथम मसीही कलीसिया के प्रोत्साहन के लिये प्रयोग किया।

39

उसके बाद यीशु स्वयं व्यक्तिगत रूप से शब्दों और कार्यों के द्वारा यह दिखाने आए थे कि वास्तव में परमेश्वर कैसा है। संसार को परमेश्बर के प्रेम और चिन्ता को प्रकट करने वाला उनसे अच्छा माध्यम नहीं मिला है।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

40

कलवरी के समय से अब तक उन्नीस सदियाँ बीत चुकी हैं, परन्तु अब भी पुरुष और स्त्रियाँ और लड़के और लड़कियाँ क्रूस के नीचे अब भी घुटने टेकते हैं और संसार के उद्धारकर्त्ता के प्रति न खत्म होने वाली वफादारी और भक्ति की शपथ खाते हैं। बाईबिल कहती है कि जब यीशु स्वर्ग में वापिस गए तो उन्होंने अपने अनुयायियों को प्रोत्साहित करने के लिये विशेष वरदान दिए।

41

(मूलपाठः इफिसियों ४:८)
"इसलिए वह कहता है कि वह ऊँचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बांध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए।"
इफिसियों ४:८
वे दान क्या हैं?

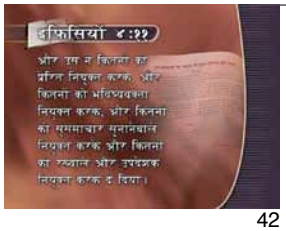

42

(मूलपाठः इफिसियों ४:११-१५)
बाइबिल कहती है, "और उस ने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यवक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया।"
इफिसियों ४:११

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

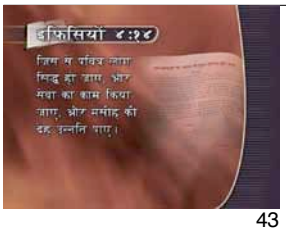

43

मसीह ने कलीसिया को उपहार क्यों दिये? बारहवाँ पद कहता है, "जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाए और मसीह की देह उन्नति पाए।"

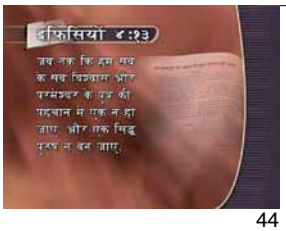

44

कलीसिया में कितनी देर तक ये वरदान रह सकते हैं?"

जब तक हम सब विश्वास में और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में और एक सिद्ध मनुष्य एक हो जाएँ,

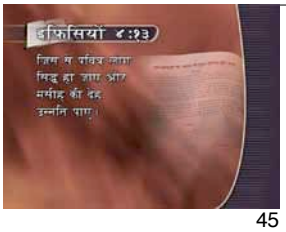

45

और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं।" पद १३

बाइबिल कहती है कि ये वरदान कलीसिया को स्थिरता और लोगों को दृढता देंगे।

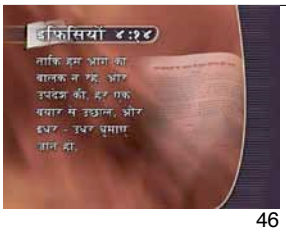

46

ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्य की ठग-विद्या और चतुराई से

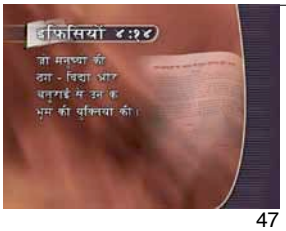

47

उन के भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हैं।" पद १४।

ध्यान दीजिए कि भविष्यवाणी के वरदान का "आत्मिक वरदानों" मे कहाँ है? पौलुस लिखता है,

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

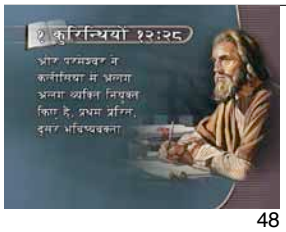

48

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों १२:२८)

"और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं, प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यवक्ता ..."

१. कुरिन्थियों १२ : २८

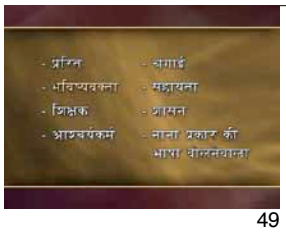

49

भविष्यवाणी का दान प्रेरिताई के बाद दूसरी श्रेणी में था, परन्तु इसे एक बहुत महत्वपूर्ण और आवश्यक वरदान होना था जिससे कलीसिया के कार्य में सहायता मिले।

50

पौलुस ने आत्मा के दानों की मनुष्य के शरीर के विभिन्न अंगों से तुलना की। उसने दिखाया कि जिस प्रकार आंखें, सिर, मुँह और शरीर के दूसरे सभी अंग शरीर के कार्य के लिए आवश्यक हैं इसी प्रकार आत्मिक दान कलीसिया के लिये हैं। उदाहरण के लिए, बिना दर्शन के कलीसिया अंधी है!

51

(मूलपाठः नीतिवचन २९:१८)

"जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं, और जो व्यवस्था को मानता है, वह धन्य हो जाता है।"

नीतिवचन २९:१८

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

52

परन्तु आप कहते हैं, "मसीह के वापिस स्वर्ग जाने के बाद और उसके सभी शिष्यों के मरने के बाद भविष्यवाणी के दान का क्या हुआ?"

53

बहुत समय नहीं बीता था जब कलीसिया लापरवाह और परमेश्वर के नियमों के प्रति अविश्वासी हो गई। यिर्मयाह बताता है कि जब इस्राएलियों ने कुछ समय के लिये धर्म त्याग दिया था तो उसका क्या फल हुआ:

54

(मूलपाठः विलापगीत २:९)
"व्यवस्थारहित हो गए हैं, और उसके भविष्यवक्ता यहोवा से दर्शन नहीं पाते हैं।"
विलापगीत २:९

55

जब प्रथम कलीसिया ने मूर्तिपूजकों की रीति-रिवाजों को अपनाया और बाइबिल की मौलिक सच्चाईयों से छोड़ दिया, तब परमेश्वर ने एक-एक कर सारे आत्मिक दान वापस ले लिये।

56

कलीसिया के धर्म त्याग के बीच के समय या अंधकार के युग में बाईबिल का प्रयोग मठों तक ही सीमित था। साधारणतः ये इब्रानी, यूनानी और रोमन भाषाओं में लिखी जाती थीं।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

57

साधारण लोगों को बाइबिल रखना या पढ़ना मना था। केवल याजकों को ही बाइबिल को पढ़ने और उसकी व्याख्या करने का अधिकार था।

कुछ ईमानदार मसीही ही बाइबिल और उसकी सच्चाई को पकड़े हुए थे।

विरोध होने पर भी उन्होंने मिशन के कार्य को जारी रखा और बाइबिल के भागों को, जो उन्हें प्राप्त थे, एक दूसरे में बांटा। सुधार के बीज को उन्होंने विक्लिफ, लूथर और हस से पहले लगाया।

58

(दृश्य)

मार्टिन, लूथर और दूसरों ने लोगों की साधारण भाषा में बाइबिल का अनुवाद किया। बाधाएं आई, परन्तु इसने केवल परमेश्वर के वचन के लिए और अधिक इच्छा जगाई।

59

और जैसे लोग परिश्रम से बाइबिल में सत्य की खोज करने लगे तो उन्हें शताब्दियों से छिपी पुरानी सच्चाईयाँ मिलीं। इन सच्चाईयों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया गया और एक महान धार्मिक जागृति आई।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

60

इस समय एक नया धार्मिक आन्दोलन आरम्भ हुआ -- समर्पित मसीहियों का एक समूह जिसमें कुछ बैप्टिस्ट, कुछ मेथोडिस्ट, कुछ प्रेसबाइटेरियन और दूसरे और थे, बाइबिल का अध्ययन और सत्य के प्रकाश के लिये प्रार्थना करने लगा।

61

जब वे बाईबिल की खोज कर रहे थे तब उन्हें परमेश्वर के चौथे नियम में उसकी सृष्टि का महान स्मरण चिन्ह मिला। परमेश्वर ने अपने लोगों से इस दिन को स्मरण रखने के लिए कहा है। उन्होंने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को पढ़ा और देखा कि परमेश्वर के अंतिम दिन के लोग कैसे होंगें:

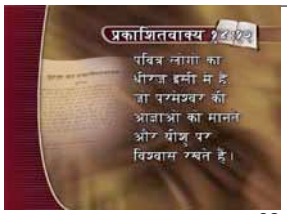

62

((मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १४:१२)

"पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं।"

प्रकाशितवाक्य १४:१२

जब उन्होंने दूसरी पुस्तकों को पढ़ा और उनका अध्ययन किया। वे प्रभावित हुए कि परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का अर्थ है बाइबिल के सब्त को मानना।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

63

सृष्टि के इस स्मरण चिन्ह को उन्होने ग्रहण किया, और संसार के सामने सब्त की सच्चाई को प्रकाशित किया।

64

(दृश्य)

और भविष्यवाणी का वरदान? क्या परमेश्वर सब्त का पालन करने वालों को इस अंतिम समय में भविष्यवाणी के विशेष वरदान को फिर से देगा? क्या परमेश्वर के पास कुछ विशेष दान है? क्या यह सोचना गलत होगा कि इस पीढ़ी के लिये परमेश्वर के पास कोई विशेष दान है?

65

(मूलपाठः योएल २:२८,३१)

सुनिए: "उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेल लूंगा;

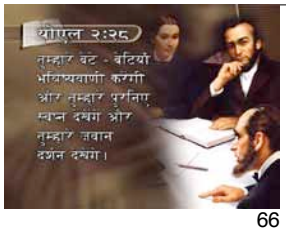

66

तुम्हारे बेटे -बिटियाँ भविष्यवाणी करेंगी और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगें और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे।"

67

"...यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले।"

योएल २:२८,३१

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

68

ध्यान दीजिए कि परमेश्वर ने कहा कि यह प्रभु के महान और भयानक दिन से पूर्व होगा -- या मसीह के दूसरे आगमन के ठीक पहले होगा। परमेश्वर के लोगों के पास संसार के अंतिम समय में भविष्यवाणी का वरदान होगा। कोरिन्त की कलीसिया को लिखते हुए पौलुस ने परमेश्वर के अनुयायियों के विषय में कहा:

69

(मूलपाठ: १ कुरिन्थियों १:७)
"यहाँ तक कि किसी वरदान में तुम्हें घटी नहीं, और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने की बाट जोहते रहते हो।"
१ कुरिन्थियों १:७

70

हमने पहले देखा है कि अन्त के दिनों में परमेश्वर के लोगों की पहचान होगी: "जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं।"
प्रकाशितवाक्य १२:१७

71

"पवित्र लोगों का धीरज

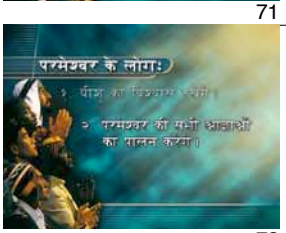

72

और परमेश्वर की आज्ञाओं को मानें"

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

73

और उनके पास यीशु की गवाही होगी।

74

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १९:१०)

हम कह चुके हैं, "यीशु की गवाही भविष्यवाणी की आत्मा है।"

प्रकाशितवाक्य १९:१०

दूसरे शब्दों में, यीशु की गवाही का अर्थ है भविष्यवाणी के वरदान के द्वारा यीशु की गवाही देना।

प्रकाशितवाक्य के अनुसार, अन्त के दिनों की परमेश्वर की कर्ल्लीसिया जो उसका प्रकाश जगत को देगी उसकी विशेषता होगी कि वह यीशु की गवाही देगी, सारी आज्ञाएँ मानेगी, और भविष्यवाणी के वरदान का आशीष पायेगी।

75

हाँ, परमेश्वर अब भी "सम्पर्क" में रहना चाहता है।" उसके पास इस पीढ़ी को कहने के किये अभी कुछ है।

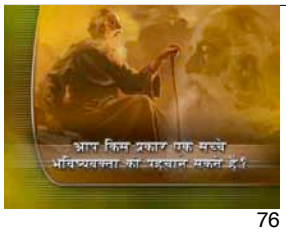

76

परन्तु आप पूछ सकते हैं, "धोखे की संभावना के विषय में क्या किया जाए?

हम कैसे एक सच्चे भविष्यवक्ता और एक झूठे भविष्यवक्ता के बीच के अन्तर को बता सकते हैं?"

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

77

धोखे की संभावना सदा रही है। पूरे इतिहास में सच्चे और झूठे भविष्यवक्ता होते रहे हैं। यदि हम सच्चे भविष्यवक्ता को पहचानना जानते हैं तो हमें झूठे भविष्यवक्ताओं की चिन्ता नहीं करनी है।

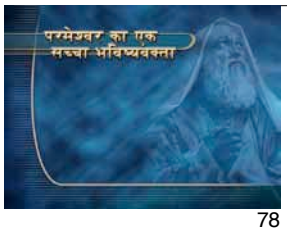

78

बाइबिल एक सच्चे भविष्यवक्ता की पहचान कराती है:

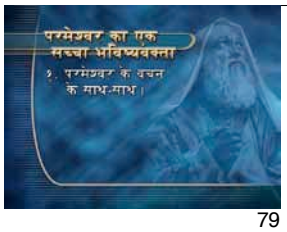

79

एक सच्चे भविष्यवक्ता का संदेश परमेश्वर के वचन और उसके नियम के साथ पूर्ण एकता में होगा।

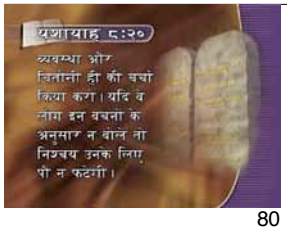

80

(मूलपाठः यशायाह ८:२०)

"व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा किया करो। यदि वे लोग इन वचनों के अनुसार न बोलें तो निश्चय उनके लिए पौ न फटेगी।"

यशायाह ८:२०

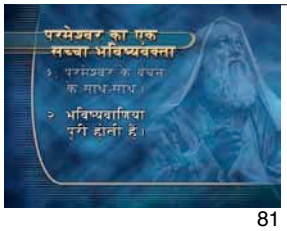

81

एक सच्चे भविष्यवक्ता की भविष्यवाणी अवश्य पूरी होनी चाहिए।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

82

(मूलपाठः यिर्मयाह २८:९)

"...जब उसका वचन पूरा हो, तब ही उस भविष्यवक्ता के विषय यह निश्चय हो जाएगा कि यह सचमुच यहोवा का भेजा हुआ है।"

यिर्मयाह २८:९

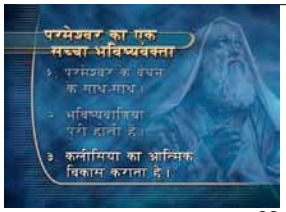

83

एक सच्चे भविष्यवक्ता की भविष्यवाणियाँ कलीसिया का आत्मिक विकास कराती हैं। भविष्यवाणी का वरदान दिए जाने का एक उद्देश्य कलीसिया का निर्माण है। यदि हम सच्चे दान की खोज करना चाहते हैं तो हमें सच्ची कलीसिया की खोज करनी चाहिए। वे एक दूसरे से संबंधित है।

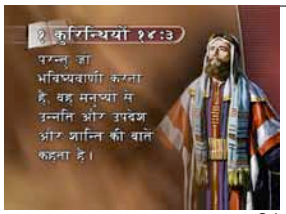

84

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों १४:३,४)

"परन्तु जो भविष्यवाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति और उपदेश और शान्ति की बातें कहता है।"

85

"परन्तु जो भविष्यवाणी करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है।"

१ कुरिन्थियों १४:३,४

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

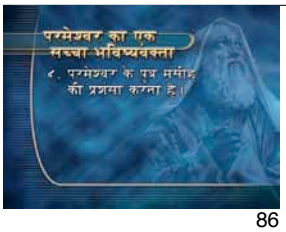

86

एक सच्चा भविष्यवक्ता मसीह की परमेश्वर के पुत्र और मनुष्य जाति के उद्धारकर्त्ता के रूप में प्रशंसा करेगा:

87

(मूलपाठः १ यूहन्ना ४:१,२)

"हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, वरन् आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं;"

88

क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।"

89

"जो कोई आत्मा मान लेती है, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है।"

१ यूहन्ना ४:१,२

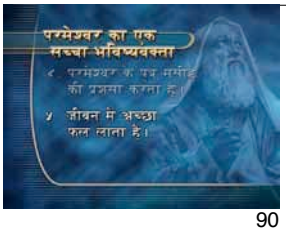

90

एक सच्चा भविष्यवक्ता या भविष्यवक्तिन अपने जीवन और कार्यों के द्वारा पहचाने जा सकते हैं।

91

(मूलपाठः मत्ती ७:१६,१८)

"उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे ..."

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

92

अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है।"

मत्ती ७:१६,१८

93

इन पदों के आधार पर इस सच्चाई का पता लगता है कि हर एक जो भविष्य की बातें बताता है वह परमेश्वर का सच्चा भविष्यवक्ता नहीं है।

94

एक सच्चे भविष्यवक्ता का संदेश, उसके जीवन, और कार्य द्वारा बाइबिल कीं भविष्यवाणी के संदेश और परमेश्वर की आज्ञाओं की पुष्टि होनी चाहिए। इसलिए जो परमेश्वर के भविष्यवक्ता होने का दावा करते हैं, उन्हें परखिए। यदि वे सही हैं तो परमेश्वर का धन्यवाद करें। यदि नहीं, तो मसीह की चेतावनी का अनुसरण करें कि उनके लिए "चौकसी करो"।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

95

मैं बताना चाहता हूँ कि कैसे परमेश्वर ने अपने लोगों से सर्म्पक बनाए रखने का निर्णय किया। यह वह समय था जब वे शताब्दियों से छुपी सच्चाईयों को संसार के सामने ला रहे थे। यह १९वीं शताब्दी की उस बड़ी धार्मिक जागृति का समय था। बाइबिल और प्रार्थना में लोगों की बहुत अधिक रुचि हो गई थी। दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की भविष्यवाणियाँ विशेष आकर्षण थीं।

96

बाइबिल के विश्वासी विद्यार्थियों ने इन भविष्यवाणियों का अध्ययन किया और अन्त में इस परिणाम पर पहुँचे कि यीशु उनके दिनों में आएगें।

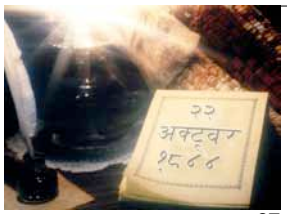

97

जब उन्होंने लगातार अध्ययन किया तो उन्होंने २२ अक्टूबर १८४४ का दिनांक निश्चित किया। परन्तु २२ अक्टूबर का दिन बीत गया और यीशु का महिमायुक्त आगमन उस दिन नहीं हुआ।

98

यह बहुत ही कड़वी निराशा थी। इस घटना ने उत्तेजना, उपहास, ठट्ठा और असत्य कथन को बढ़ोत्तरी दी।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

99

(दृश्य)

बाद में, अत्यधिक प्रार्थना और बाइबिल का अध्ययन करने के बाद उस समूह ने यह पाया कि वह दिन सही था परन्तु घटना गलत थी। दानिय्येल ८:१४ में जिस पवित्र स्थान का वर्णन है वह पृथ्वी नहीं, पर स्वर्ग था। उन्होंने सोचा था कि पृथ्वी आग से शुद्ध की जाएगी, पर असल में स्वर्ग का पवित्र स्थान शुद्ध किया जाना था। इसमें परमेश्वर के चरित्र और उसके शासन का सही ठहराया जाना था ।

100

लोग निराश हो गए थे। निराशा असहनीय जान पड़ी। परन्तु एक प्रेमी परमेश्वर सच्चाई को खोजने वाले को कभी नहीं छोड़ता और वह मसीह के आगमन की प्रतीक्षा करने वाले इन विश्वासियों को इस संकट की घड़ी में नहीं भूला। वह चाहता था कि वे जानें कि वह उन की देखभाल करता है और उनसे प्यार करने के कारण उनकी सहायता करना चाहता था। इसलिए इस अत्यन्त कठिन क्षण में परमेश्वर ने अपने लोगों को भविष्यवाणी के वरदान को फिर से दे दिया। यह आरंभ से ही बड़ी मनोहारी कहानी है।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

101

उसने १७ साल की एक दुर्बल लड़की को चुना और उसे परमेश्वर की विजय का दर्शन दिया। एलन हारमन को दिसम्बर १८४४ में उस बड़ी निराशा के एकदम बाद पहला दर्शन दिया गया। उसने देखा कि मसीह के आगमन की प्रतीक्षा करने वाले लोग स्वर्ग को जाने वाले एक चमकदार रोशनी वाले ऊचें रास्ते पर यात्रा कर रहे हैं।

102

इस संदेश ने उस छोटे और बिखरे हुए समूह को बड़ा प्रोत्साहित किया जो मसीह के दूसरे आगमन में विश्वास करते थे और जो बाद में सेवन्थ -डे एडवेन्टिस्ट के नाम से जाने जाएंगे।

103

यह युवती, जो एडवेन्टिस्ट मार्गदर्शक जेम्स व्हाइट के साथ विवाह करने के द्वारा एलन व्हाइट बनी, अपनी बुलाहट के प्रति विश्वस्त रही। सत्तर से अधिक वर्षो तक उसने परमेश्वर की ओर से व्याख्यान दिये, लिखा, सिखाया और कलीसिया को सलाह दी। यद्यपि उसकी सेवकाई और योग्यता चकित करने वाली है, उसका महानतम कार्य जैसा वह स्वयं कहती है, "स्त्री पुरुषों का अधिक बड़े प्रकाश बाइबिल की ओर नेतृत्व करना" था।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

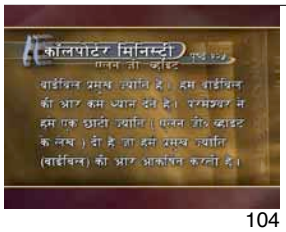

104

उसने लिखा: "बाईबिल प्रमुख ज्योति हैं। हम बाईबिल की ओर कम ध्यान देते हैं। परमेश्वर ने हमें एक छोटी ज्योति (एलन जी० व्हाइट के लेख) दी है जो हमें प्रमुख ज्योति (बाईबिल) की ओर आकर्षित करती है। कालपोर्टर मिनिस्ट्री, पृष्ठ १२५

105

उसने बाईबिल को प्रमुख स्थान दिया जहाँ हम बाईबिल संबंधी सिद्धान्तों के सभी प्रश्नों का उतर पा सकते हैं। उसने परमेश्वर के वचन की निन्दा करने वालों को यह लिखा:

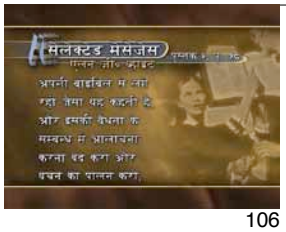

106

अपनी बाइबल से लगे रहो जैसा यह कहती है, और इसकी वैधता के सम्बन्ध में आलोचना करना बंद करो और वचन का पालन करो,

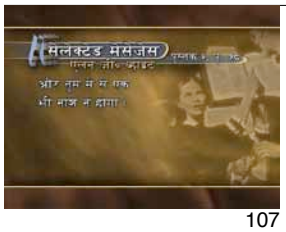

107

और तुम में से एक भी नाश न होगा।"
सेलेक्टेड मेसेजेस, पुस्तक १, पृष्ठ १८

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

108

किसी और लेखिका ने इतना अधिक धार्मिक साहित्य नहीं लिखा जितना कि एलन व्हाइट ने पुस्तकों, पत्रिकाओं, छोटे-छोटे लेख, पर्चों, और व्यक्तिगत पत्रों में लिखा। सारा जीवन उसने परमेश्वर के द्वारा दी गई सलाह और झिड़की के संदेश को परमेश्वर के लोगों तक पहुँचाया।

109

उसके लेखों में इन बातों पर सलाह दी गई: विजयी मसीही जीवन, भोजन, स्वास्थय, बच्चों की देखभाल, नशा, विवाह और परिवार, बच्चों का मार्गदर्शन, और शिक्षा। उसके अनेक लेख अब १०० वर्ष से अधिक पुराने हैं और आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के द्वारा प्रमाणित किए जा चुके हैं। शिक्षक, डॉक्टर, समाचारपत्रों के टीकाकार, और दूसरों ने इन क्षेत्रों में उसकी प्रवीणता को स्वीकार किया है।

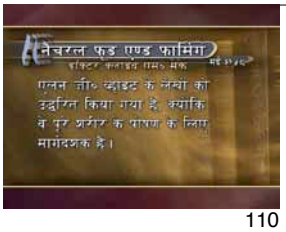

110

डॉक्टर क्लाइव एम० मेके, कोरनेल यूनीवर्सिटी के भूतपूर्व प्राध्यापक ने कहा:–"एलन जी० व्हाइट के लेखों को उद्धरित किया गया है, क्योंकि वे पूरे शरीर के पोषण के लिए मार्गदशक हैं। "– नैचरल फूड एण्ड फार्मिंग,मई १९५८।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

111

१८६४ में एलन व्हाइट ने लिखा: "तम्बाकू एक सर्वाधिक धोखेबाज और जीवन के लिए हानिकारक विष है ..."

112

"यह अधिक खतरनाक है, क्योंकि शरीर पर इसका प्रभाव बहुत धीरे-धीरे होता है और व्यक्ति को प्रायः इसका अनुभव नहीं होता।"

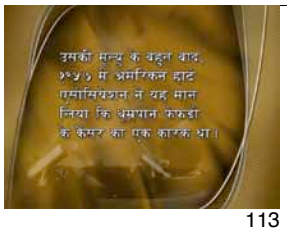

113

उसकी मृत्यु के बहुत बाद, १९५७ में अमेरिकन कैंसर सोसाइटी और अमेरिकन हार्ट एसोसियेशन ने यह मान लिया कि धूम्रपान फेफड़ों के कैंसर का एक कारक था। उसके दिनों में चिकित्सा–जगत के लोगों ने अवश्य उसके कथन को गलत माना होगा, क्योंकि तब तम्बाकू के धुंए को फेफड़ों के रोगों का इलाज समझा जाता था।

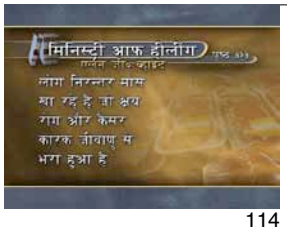

114

१९०५ में श्रीमती व्हाइट ने लिखा कि कैंसर उत्पादक "जीवाणु" थे।
उसने कहा "लोग निरन्तर मांस खा रहे हैं जो क्षयरोग और कैंसर कारक जीवाणु से भरा हुआ है।...

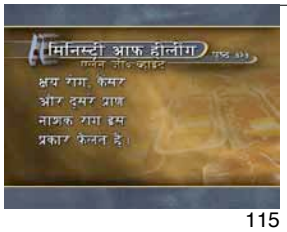

115

क्षय रोग, कैंसर और दूसरे प्राण नाशक रोग इस प्रकार फैलते हैं।"
– मिनिस्ट्री आफ हीलिंग, पृष्ठ ३१३

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

116

हम आज के युग में "वाइरस" शब्द सही प्रयोग करेंगे। ९३ वर्षों के बाद, न्यूजवीक पत्रिका ने एक लेख छापा जिसका शीर्षक था "कैंसर में वाइरस क्रियाशील कारक हैं।"

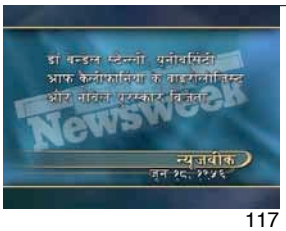

117

"डा. वेन्डेल स्टैन्ली, यूनीवर्सिटी आफ कैलीफोर्निया के वाइरोलोजिस्ट और नोबेल पुरस्कार विजेता,"

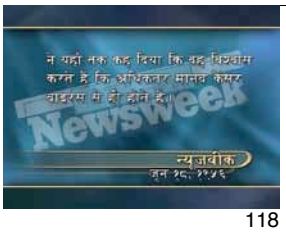

118

ने यहाँ तक कह दिया कि वह विश्वास करते हैं कि अधिकतर मानव कैंसर वाइरस से ही होते हैं।"
न्यूजवीक, जून १८, १९५६

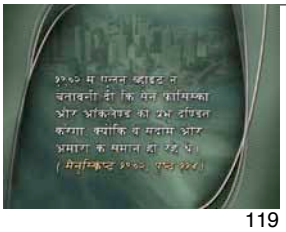
119

१९०२ में एलन व्हाइट ने चेतावनी दी कि सैन फ्रांसिस्को और ऑकलैण्ड को प्रभु दण्डित करेगा, क्योंकि वे सदोम और अमोरा के समान हो रहे थे। (मैनुस्क्रिप्ट १९०२, पृष्ठ ११४)

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

120

१८ अप्रेल १९०६ को प्रातः ५:१२ बजे सैन फ्रांसिस्को में महान भूकम्प आया। भविष्यवाणी सही थी। विनाश ठीक वैसा ही घटित हुआ जैसा कहा गया था।

श्रीमती व्हाइट की प्राप्तियाँ और भी अधिक चकित करती हैं जब हम उन प्रबल बाधाओं और असुविधाओं पर ध्यान करते हैं जिनका उसने अपने जीवन भर सामना किया।

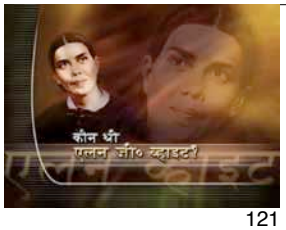

121

कोई सोच हो रहा होगा कि यह एलन व्हाइट कौन थी और कैसी थी?

उत्तर हमें पीछे नवम्बर २६, सन् १८२७ वर्ष में ले जाता है।

122

उस दिन एलीजाबेथ और एलन, दो जुड़वा बहनें, गोरहम गाँव के निकट यूनिस और राबर्ट हारमन के घर पैदा हुई। एलन आठ बच्चों में सबसे छोटी थी।

123

१ वर्ष की आयु में एक दुर्घटना ने उसके जीवन को सदा के लिए बदल दिया।

स्कूल से घर लौटते समय एक सहपाठिन द्वारा फेंके गये पत्थर से एलन की नाक टूट गई और वह गंभीर रूप से घायल हो गई।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

124

तीन सप्ताह तक वह बेहोश रही। वह अपनी शिक्षा जारी रखने में असमर्थ थी। ऐसा लगता था कि वह अधिक दिन जीवित नहीं रहेगी।

वह अपनी प्रारम्भिक शिक्षा से कभी भी आगे नहीं बढ़ सकी।

125

वर्षों बाद एलन ने अपने जीवन के उस नौवें वर्ष को मिश्रित भावनाओं से देखा।

स्कूल जाने में और भाई -बहनों के साथ खेलने-कूदने में असमर्थता सचमुच बड़ी हृदय -विदारक थी।

किन्तु जैसे कि उसके जीवन के एक पहलू का अन्त हुआ, एक दूसरा पहलू आरम्भ हुआ।

एलन बाइबिल की एक जिज्ञासू विद्यार्थी बन गयी।

वह शिविर, जागृति और घरेलू सभाओं में नियमित रूप से जाने लगी।

126

बक्सटन, मेन, में एक मैथोडिस्ट शिविर सभा में भाग लेने के उपरान्त जून २६, १८४२ को एलन का बपतिस्मा हुआ। वह मैथोडिस्ट कलीसिया की सदस्या बन गयी।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

127

बाद में एलन और उसके परिवार ने पोर्टलैण्ड, मेन, में कुछ सभाओं में सहभागिता की। वक्ता सेना का पूर्व कप्तान विलियम मिलर था जो मनोयोग से बाइबिल का अध्ययन करता रहा था।

चूंकि उसने मसीह के शीघ्र आगमन का संदेश दिया, वह और उसके अनुयायी "एडवेन्ट्स" या "मिलेराइटस" कहलाने लगे। हारमन परिवार ने मिलर के सन्देश की सच्चाई ग्रहण कर ली।

128

तब भी २२ अक्टूबर, १८४४ की महान निराशा के दिन के बाद वे भी पूरी तरह हताश हो गये। एलन अत्यधिक निराश थी। वह रोई, उसने प्रार्थना की, और उत्तर पाने के लिए दूसरे 'एडवेन्टिस्ट' विश्वासियों के समान उसने परमेश्वर के वचन का अध्ययन किया। तभी परमेश्वर ने उसे अपनी नबिया होने के लिए बुलाया। शारीरिक रुप से वह नबिया होने के योग्य नहीं थी। वह १७ वर्ष की एक लड़की थी, जो क्षयरोग और हृदय रोग से संघर्ष कर रही थी। फिर भी दिस्मबर १८४४ में परमेश्वर ने एलन से एक दर्शन में बात की। वह अपने ही शब्दों में अपनी प्रतिक्रिया के विषय में बताती है:

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

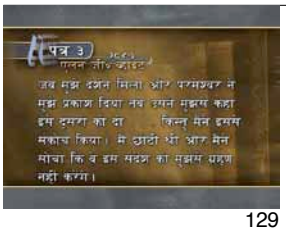

129

"जब मुझे दर्शन मिला और परमेश्वर ने मुझे प्रकाश दिया तब उसने मुझसे कहा इसे दूसरों को दो... किन्तु मैंने इससे संकोच किया। मैं छोटी थी और मैने सोचा कि वे इस संदेश को मुझसे ग्रहण नहीं करेंगे।" -एलन जी० व्हाइट लेटर ३, १८४७

130

यद्यपि वह परमेश्वर की इस बुलाहट के प्रति स्वंय को अपर्याप्त और शारीरिक रूप से असमर्थ अनुभव कर रही थी, फिर भी उसने विश्वास से परमेश्वर के बुलावे को स्वीकार किया जो उसके जीवन भर बना रहा।

131

एलन और उसके पति जेम्स व्हाइट साथ -साथ कार्य करते हुए परमेश्वर के दिए हुए प्रकाश को लोगों में बांटते रहे।

132

उनकी सफलता और उनकी धर्म निष्ठा उसके अनेक लेखों में पायी जाती है। एलन व्हाइट अपने जीवन भर एक समर्पित मसीही, परमेश्वर की एक अथक सेविका, और एक अच्छी माता बनी रही। उसे पति, परिवार, और संसार के हजारों लोगों का प्रेम प्राप्त था।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

133

६ अगस्त, १८८१ को एलन के पति जेम्स की बैटल क्रीक, मिशीगन, में मृत्यु हो गयी। उसकी कब्र के पास खड़ी एलन उस काम को आगे बढ़ाने की प्रतिज्ञा कर रही थी जो वे दोंनो ३५ से अधिक वर्षो में बलिदान और दृढ़ निश्चय के साथ करते आए थे।

134

एलन के कुछ सर्वाधिक सुन्दर और प्रेरणादायक लेख इस तिथि के बाद सामने आये। उसने अगले ३४ वर्षो तक अकेले कार्य किया। उसकी सेवकाई उसे अनेक देशों में विश्वासियों के मार्गदर्शन और आत्मिक विकास के लिए ले गई।

135

एलन गोल्ड व्हाइट का जीवन और सेवाकाला १६ जुलाई, १९१५ को समाप्त हो गया। वह ८७ वर्ष से अधिक आयु की थी। मिशिगन के बैटल क्रीक में ओकहिल नामक कब्रस्थान में उसे अपने पति के बराबर दफन किया गया। उसकी मृत्यु के कुछ सप्ताह बाद एक समाचार पत्र ने यह कथन छापा:

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

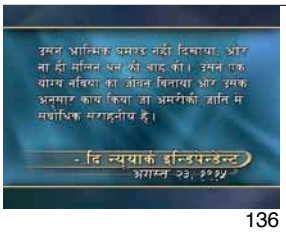

136

"उसने आत्मिक घमण्ड नहीं दिखाया, और ना ही मलिन धन की चाह की। उसने एक योग्य नबिया का जीवन बिताया और उसके अनुसार कार्य किया जो अमरीकी जाति में सर्वाधिक सराहनीय हैं।"
- दि न्यूयार्क इन्डिपेन्डेन्ट, अगस्त २३, १९१५ ।

137

जी हाँ उसकी आवाज मौन है और उसकी कलम रूक गयी है। परन्तु परमेश्वर की इस विश्वस्त वक्ता के चेतावनी, निर्देश, और प्रोत्साहन के अनमोल शब्द परमेश्वर के लोगों का अंतिम विजय तक मार्ग-दर्शन करते रहेंगे।

138

(दृश्य)
संसार के लिए उसकी वसीयत प्रेम का एक उपहार है --एक प्रेमी परमेश्वर का पृथ्वी के लिये प्रेम -संदेश। परमेश्वर अब भी चाहता है कि मसीह के लौटने तक अपने बच्चों से "सम्पर्क" बनाए रखे। तब यह छोटा प्रकाश मंद पड़ जाएगा जब हम उसकी उपस्थिति के महिमामय प्रकाश में खड़े होंगे ताकि परमेश्वर को फिर से देख सकें और सदा उसकी संगति में रहें।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

139

अनेक वर्षों पूर्व दक्षिण अफ्रीका के बेचुआनालैण्ड के विशाल रेगिस्तान सुकूबा नामक एक अनपढ़ व्यक्ति रहता था। भ्रमणकारी जाति का सदस्य होने के नाते वह एकान्त जीवन जी रहा था। जाड़े की एक रात वह अपने शरण स्थल में रेंग कर घुसा और सोने की तैयारी की। किन्तु अचानक रात दिन से भी अधिक प्रकाशमान हो गयी। एक चमकदार व्यक्ति उसे दिखाई दिया और उसने सुकूबा को बताया कि उसे पुस्तक के लोगों को ढूंढ़ना था। उसे ऐसे लोगों की खोज करनी थी जो परमेशवर की उपासना करते हैं। सुकूबा को इस निर्देश का अर्थ नहीं जान पड़ा। यह पुस्तक क्या थी? और यदि उसे वह मिल भी जाये तो वह पढ़ेगा कैसे? उसकी भाषा अन्य अफ्रीकी जातियों की भाषाओं से एकदम अलग थीं जो कभी लिखी नहीं गयी हैं। किन्तु यह प्रकाशमान व्यक्ति कह रहा था, "वह पुस्तक बोलती है तुम उसे पढ़ सकोगे।"

सुकूबा ने अपने परिवार के साथ उस पुस्तक की खोज में कई दिनों तक यात्रा की। वह कुछ बन्टू किसानो की झोपड़ी तक पहुँचा और पूछा कि क्या वे पुस्तक वाले लोगो को जानते थे। कबीला का आदमी यह सुन कर दंग रह गया कि झाड़ियों मे रहने वाला व्यक्ति किसी

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

प्रकार उसकी बन्टू भाषा बोल सकता था। वह सुकूबा को तुरन्त ही अपने पादरी के पास ले गया। पादरी सुकूबा की कहानी से अत्यधिक द्रवित हुआ। और उसने कहा, "तुम्हारी यात्रा पूरी हुई।" सुकूबा बहुत खुश हुआ, परन्तु उस रात वह प्रकाशमान व्यक्ति उसे फिर दिखाई दिया। उसने कहा ये वे लोग नहीं थे जिनको उसे ढूंढ़ना था। उसे सब्त मानने वाली कलीसिया और पादरी मोए को ढूंढ़ना होगा। पादरी मोए के पास एक किताब होगी और चार भूरी पुस्तकें भी जो वास्तव में नौ हैं। अगले दिन सुकूबा ने एक चिन्ह के लिए प्रार्थना की। उसे अपनी यात्रा के लिए कुछ निर्देशन चाहिए था। जब उसने प्रार्थना की तो आकाश में एक बादल प्रकट हुआ। सुकूबा उसके पीछे चलने लगा और सात दिन तक उसका पीछा किया। वह एक गांव विशेष के ऊपर लुप्त हो गया। वहाँ सुकूबा ने पास्टर मोए के लिए पूछा और तुरन्त उसे उसके घर का रास्ता दिखाया गया।

जब सुकूबा ने अपनी कहानी स्थानीय भाषा में सुनायी तब पादरी मोए ने अपनी पुरानी बाईबिल निकाली। "यही है! " सुकूबा चिल्ला उठा, "यही है। लेकिन यह पुस्तकें चार नही, वे तो वास्तव में नौ हैं?" यह स्पष्ट

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

हुआ कि एलन व्हाइट ने वर्षो पहले परमेश्वर की कलीसिया हेतु दिशा निर्देश की नौ पुस्तकें लिखी थीं जिन्हें "टेस्टीमोनीज़ टू दी चर्च " कहा गया। लेकिन बाद में वे चार (पुस्तकों) में बदल दी गई। सुकूबा की खोज समाप्त हो गयी थी। उसने सब्त को मानने वाले और भविष्यवाणी के वरदान से आशीषित लोगों को पा लिया था। अन्त में उसने और उसके परिवार ने मसीह को स्वीकार किया और बपतिस्मा लिया। वह अपने लोगों के लिए मिशनरी बना। परमेश्वर स्त्री पुरुषों को अपनी सच्ची कलीसिया में लाने के लिए आश्चर्यजनक ढंग से काम कर रहा है। आप अकस्मात ही इस कहानी को नहीं सुन रहे हैं। सुकूबा के समान आपका मार्गदर्शन हो रहा है। परमेश्वर अपनी सच्चाई की ओर आपका मार्ग दर्शन कर रहा है। परमेश्वर भविष्य का सामना करने के लिए आपको साहस दे रहा है। शायद आप सत्य की खोज कई वर्षो से कर रहे हैं। मेरा विश्वास है कि आपकी खोज आज पूरी हो चुकी है। परमेश्वर का अदृश्य हाथ आपको यहाँ लाया है। आप सुकुबा के समान कह सकते हैं कि "यही है परमेश्वर की कलीसिया।" क्या आप उनके साथ जुड़ना नहीं चाहेंगे जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं? क्या आप परमेश्वर के अन्तिम समय के लोगों के साथ जुड़ना नहीं चाहेंगे? इस समर्पण पर सावधानी पूर्ण विचार कीजिए। यह आपके जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण निर्णय हो सकता है।